॥अ०॥१॥

॥श्रीरामविजयपंचाध्यायप्रारंभः॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

श्रीमारुतीगणाधिपतये नमः ॥ श्रीरामकथा तेजःपुंज ॥ हे चि विशाळ दिव्य जाहाज ॥
॥१॥ याशि नवखण हे सहज ॥ नवविध भक्तिचें ॥१॥ येकयेक खणांत ॥ बैसले भनु
तापि माहाभक्त ॥ प्रेमाचें शिड वरि फडकत ॥ पाळविल मुमुक्षालें ॥२॥ येथें कर्णधार
निश्चित ॥ स्वयें जाणिजे श्रीरघुनाथ ॥ तो चि पर पाराशि नेत ॥ निजदास बैसउनि
॥३॥ सारामाचे नाम गोड ॥ कथा जा[illegible]नाहुनि वाड ॥ जेविल्या अनेक तां पुरे कोड ॥
न लागे चाड आणि कांचि ॥४॥ जो जो श्रो[illegible] कथेशि सादर ॥ तो तो रसवाद अपार ॥
जैसा पुष्करिं देखतां रोहिणिवर ॥ चं[illegible]कांता पाझर सुटे ॥५॥ ब्रहस्पति सारिखा ॥५॥
वक्ता ॥ मतिमंद मिळालिया श्रोता ॥ व्यर्थ गेलि त्तकथा ॥ जो नाहि सादर श्रोत
यशि ॥६॥ जैसें कानना माजि रुदन ॥ कोण्हि च न पुसे तया लागुन ॥ तैसें मति

" Joint project of The Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

2A

मंदापुढें श्रवण॥ करणे साचप्रकारें॥७॥ जैसिं भिन्ने केलिं स्वाधिष्टें॥ परि जेवणार
बैसलू रोगिष्ट॥ तरि ते सुगरणिचे कष्ट॥ शुंन्यस्थानि पडिले किं॥८॥ षडरसअ
नं परिकर॥ परि सोजेउं जाणे कायखर॥ एकगर्लेत सुंदर॥ हिरा नेउनि टाकिला॥९॥
कवित्व सागरिं रत्नें दिष्टांत॥ त्याचे परिक्षक ज्ञातपंडित॥ मतिमंद कुटिकनिश्चि
त॥ त्यासि परिक्षा न कळे हें॥१०॥ सुवर्णरस उकिरडां वोतिला॥ गर्भांधासि दर्पण दा
खविला॥ किं दिव्य मंचक घातला॥ चिताभुमिशि नेउनियां॥११॥ कागासि सम
र्पिलिं अमृतफळें॥ उष्ट्रापुढें सालिवकळें॥ किं जेमत्स्यप्रायनिडेलें॥ त्यासि पु
जिलें व्यर्थ जेविं॥१२॥ किं वनचरें रत्नमाळा॥ घातलि रिवाभिंनाचा गळां॥ किं
कस्तुरि टिळक केरखिला॥ शुकराचे ललाटिं॥१३॥ तैसि मतिमंदापुढें कथा॥ वाचे

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

३

विसंतापेबोलतां॥ जैशिपद्मिणिराजदुहिता॥ शेंदाप्रविदिधलि॥१४॥ भग्नपात्रीमांडिनि
॥२॥ र॥ कदांकांकिंनराहेस्थिर॥ तरितुलिभकवरिल्हतुर॥ कथासादरपरिसाहो॥१५॥ आधिंच
मुक्ताफळसुवास॥ आधिंचहिराआणिपरिस॥ तैसाआधिंचतुर॥ वरिप्रेमरस॥ श्रीराम
शिआवडेतो॥१६॥ असाचौथाअध्यायोचे बोलि॥ कथासुरसपरिसिलिसंति॥ सांगितलि
श्रीरामाचिजन्मस्थिति॥ बंधुसमवेत ॥१७॥ जोसरस्सिजाह्नवाचापीता॥ त्याशि
दशरथबापकौशल्यामाता॥ ज कैलार। बया लवता॥ अयोध्यामाजिप्रघटला॥१८॥
दशरथाचेभाग्यथोर॥ रत्नजोडितपाचे॥ चारिलांबविलेपरिकर॥ चौथेकुमर ॥२॥
निजलितथें॥१९॥ तेरावदिनशिंपाळणा॥ पहुडनिलारामराणा॥ जोअगम्यवेदपुरा
णा॥ जोजाह्मणोनिहाळविति॥२०॥ जेंसनकादिकांध्येयध्यान॥ जोमृडाणिपतिचेचिंतन॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(३८) ज्यो त्वतुरास्याचे देवतार्चन॥ जो जो ह्मणा निहाळविति॥२१॥ ज्यो आदिमायेच्या निजवर॥
ज्यो पुराणपुरुष परात्पर॥ ज्यो मायाचक्राचा कर्कचतुर॥ जो जो ह्मणो निहाळविति॥२२॥ ज्यो
अगम्य दशशतवदना॥ श्रम पावोणा तो रामगणा॥ ज्यो विकिलाउनउभ्या ललना॥ सुवा
शिणि कोणत्या ऐका॥२३॥ पाकव्या भोय[illegible] मिनि॥ शांति स्थ्या क्षमा दया उन्मनि॥
उपरति सद्विद्या स्वासिणि॥ ज्यो ज्यो शो[illegible] विसि॥२४॥ निर्वाणदिक्षा स्वरूपस्थि
ति॥ मुमुक्षा निष्कामना प्रचिति॥ सुलि[illegible] समाधि सहजस्थिति॥ किळा गांति स्वानंदे॥२५॥
परा पश्यंति मध्यमा वैखरि॥ गर्जे रंगांति च्यारि नारि॥ च्यारि मुक्ति नीर्थारि॥ च्यहुको
निलटस्त॥२६॥ घरां तमुख्य या सुंदरि॥ ईतरा बैसल्या बाहेरि॥ जागति स्वरूप सुषु
सि नारि॥ त्यासि रावणारि दिसेना॥२७॥ असंभावना विपरितभावना॥ विक्षिपता

गतायाला ज्ञाणा॥ तुर्यादविशाहाणपणा॥ बहुत ज्ञाणिति असेंमि॥२८॥ बारासोळा
॥३॥ चौदा नारि॥ गळबळाकरिलि बाहेरि॥ चौसष्टिदाविलिकळाकुसरि॥ परिअंतरिंत्र
वुशानके॥२९॥ असाकेसैंकळनिलंबिणि॥ वेंटिकोशान्येचिभरोनि॥ वस्त्रअळंकारअ
पुनि॥ सदनाप आपुल्यागेलिया॥३०॥ [illegible] धरिजन्मलारघुपति॥ विघ्नेंराक्षसां
शि ज्ञाणविलि॥ त्रळयविज्ञाकडकडा [illegible] ति॥ लंकेवरिअकस्मात॥३१॥ कोंपों
लागले लंकानगरा॥ भुकंपहोयवारंवा[illegible] च्चमोडलें राजछत्र॥ सभात्रेतवलदिसव
से॥३२॥ माहादौरें उभ्रिडळल॥ रावणाभ्री[illegible]त्रटल॥ दाहिमस्तकिंचपडल॥ मुगुटअखा ॥३५
लेंडुगेचि॥३३॥ शक्रारिपाहेंआरसानिमेळा॥ तोंओतनदिसेशिरःकमळा॥ राजमं
दिरावरिअमंगळा॥ दिवाभिसेबोभाति॥३४॥ स्वप्नेदेखेंमंडोदरि॥ मर्कटेंतोडिलि

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

गकसरि॥ किंबा कविधना ज्ञाकां नारि॥ वोटि भरित्ति थुळिने॥३५॥ ललाट सुलोचने चेंशुं
न्य॥ देखत्ति ज्ञालि मय कंन्या॥ चिंता पडिलि दशा केंरप्राण्या॥ ह्मणे ईश्वर क्षोभला॥३६॥ ई
श्वर ज्ञालिया पाठिमोरा॥ नसत्तिच विघ्नें येति घरा॥ माहार त्वें होत्ति गारा॥ कोण्ही नपु
सेतयालें॥३७॥ आपुलें द्रव्य लोकावरि॥ बुडावें जायन लाभ करि॥ ज्ञाचें द्यावें तद्वारिं॥
बैसत्ति आपापा लोनिया॥३८॥ वैरियांकरिसा पडे कर्मे॥ अवदसा येउनि बुउथमे॥ वि
शेष वाढे क्रोधकाम॥ तरि देवक्षोभ जाणावा॥३९॥ आपुले जे कां शत्रु पुर्ण॥ त्यासि आ
पणा पिडिलें दारूण॥ अडल्या धरण सांचचे रष॥ तरि देवक्षोभ जाणावा॥४०॥ लाभा
कारणें निघेउदमास॥ तोंहाणि च होयदिवसें दिवस॥ पुज्यमानिं अपमान विशेष॥
तरि देवक्षोभ जाणावा॥४१॥ सुल्द आसदेष करित्ति॥ नसतेंच वेव्हार येउनि गळां पडत्ति॥

(5)

सदां सळमळ वाटे चित्ति ॥ तरि देवक्षोभ जाणावा ॥ ४२ ॥ आपुलि स्त्रि राज धन ॥ शत्रु भोगुं
पाहे आपण ॥ देहपिडे व्याधि विण ॥ तरि देवक्षोभ जाणावा ॥ ४३ ॥ विद्या जवळि बहुत असे ॥
॥४॥ बोलें जातां मति भ्रंश ॥ कोण्ही तया शि न पुसे ॥ तरि देवक्षोभ जाणावा ॥ ४४ ॥ ठेविला ठेवा
न सापडे ॥ न सलिच व्याधि आंगिं जडे ॥ सदां भय वाटे चहुंकडे ॥ तरि स्वदेवक्षोभ जाणावा
॥ ४५ ॥ रथ्थ्य पणि येदरि इस्त्री मत्य पावेंग ले नेत्र ॥ हुकसोनि उपस्थिति पुत्र ॥ तरि स्वदेवक्षोभ
जाणावा ॥ ४६ ॥ असो लंके माजि रावण ॥ सांगे प्रधाना शि बोलाउन ॥ अहो रात्र सावधान ॥
लंका नगर रक्षावें ॥ ४७ ॥ अयोध्ये शि राम जनाता ता काळ ॥ रक्ष विराजलि सदां फळ ॥
गाई दुभति त्रि काळ ॥ स्त्रि रतु बळ न सांवरे ॥ ४८ ॥ आधि व्याधि रहित लोक ॥ नाहिं चिं ॥५॥
ता दरिद्र दुख ॥ शुष्क धरणि शि अपार पिक ॥ पिकों लागलें तेथवां ॥ ४९ ॥ अवतार जो जगा खिवन ॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

5A

जन जरारहित जाले तरुण ॥ अविद्यापापमुक्ति हुन ॥ दशरथीं जाहाले ॥ ५० ॥ दरिद्रि जाले
भाग्यवंत ॥ मुर्खे ते बोलके पंडित ॥ कुरूप ते स्वरूपवंत ॥ दैदिप्यमान तेजस्वि ॥ ५१ ॥
अवतरतां चि श्रीराम ॥ निःशेष गेले क्रोध काम ॥ अयोध्यावासियां सुकाळ परम ॥
स्वानंदाचा जाहाला ॥ ५२ ॥ यहिं प्रका[illegible]भास्कर ॥ मग कैंचा हो अंधःकार ॥ जागा
होतां ग्रहस्त चोर ॥ पळोनि जाति वे[illegible] ॥ ५३ ॥ कि बोलतां ज्ञान वेदांत ॥ सकळ मळें
होति कुंटित ॥ कि सद्विवेक होतां सार ॥ संसारदुख विलके ॥ ५४ ॥ कि प्रवेशतां वैरा
ग्य शांति ॥ दुष्ट काम क्रोध पळति ॥ तैसा अवतरतां रघुपति ॥ दोष दुष्काळ निमा
ले ॥ ५५ ॥ असो दशरथाचे सुत ॥ येका मागे येक रांगत ॥ हळु हळु चौघे चालत ॥ संतो
षत मातापिता ॥ ५६ ॥ पांच बंधु अंगणात ॥ परस्परें हात धरुनि चालत ॥ येकास येक

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yeshwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(6)

पाहुनि हांसत ॥ बाळभावें करोनियां ॥५७॥ कौशल्या उभि राहोनियां ॥ च्यौघां बा
॥५॥ ळा विडे वावया ॥ तवले ज्ञालि पकोनियां ॥ धावोनि माया धरि मग ॥५८॥ च्यौघां
च्यिं मुखें घुवोनियां ॥ भोजना शिं बैसवि माया ॥ निवल दशरथाच्यि काया ॥ पुत्रां
लागिं पाहातां ॥५९॥ ह्मणे कोण पुण्याचे पर्वत ॥ पुर्विं मि आचरलों बहुत ॥ तेस्चि
हे च्यौघे अहिस्य ॥ भवन तरले माझें ॥६०॥ ज्ञाले अट वरुषाचें सुंदर ॥ च्यौघा
शिस मस समान अळंकार ॥ च्यिमणि धनुष्य परिकर ॥ च्यिमणे शार सोडिति ॥६१॥ च्यि
मण्या मुर्ति च्यिमणि याणें ॥ च्यिमणि धनुष्य च्यिमणे बाण ॥ च्यिमणिने पुरें रेंरुण ज्ञु ॥५॥
ण ॥ पाईं गाडे तिच्यौघाचें ॥६२॥ च्यिमणे पितांबर कटि मेखळा ॥ च्यिमणि पदक मु
क्तमाळा ॥ च्यिमण्या शेवकां चामेळा ॥ रामा भोवता शोभला ॥६३॥ उभ्यां तरवेक ता रघुपति ॥

शेवकछत्रें मित्रपत्रें धरिति।। येकचामरें वरि ढाळिति।। राजनिति करोनियां।।६४।।
श्रीराम आधिं सोडिला बाण।। पाटि सोडिल लक्षुमण।। त्यामागं भरथ शत्रुघ्न।। सोडित
हि दिन तैसेचि।।६५।। दुरोनि पाहे दशरथ विर।। चौघे येक दांचि याकिति शर।। असुर
प्रतिमा करुनि थोर।। शिरें त्यांचिं उडवि[illegible]ति।।६६।। वेदोतिच्या दिव्य रति।। सर्वांवरि
हु डेविगडोति।। तैस बाण साहिरदु[illegible]।। अचुक बाणि चपळ तै।।६७।। असा
चौघांचे मुंजिबंधन।। श्रीवशिष्टा शिप[illegible]न।। अपार मेळउनि ब्राह्मण।। भोजनंद
न करिता जाला।।६८।। श्रीरामाचा स्तव बंधुहोतौ।। अस्मा शिष्यि तथें राबत।। चा
रि दिवसपर्यंत।। न्यु न्यपदार्थ नसे कांहि।।६९।। यज्ञभोक्ता रघुनाथ।। त्याशि ब्राह्मण
घालिति यज्ञापवित।। गाईत्रिमंत्र राम जपत।। वेदवंद्य माहाराज तो।।७०।। जैसें जाति

A project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(२) यारत्नबंधन॥वशिष्टामुनि पाशिं अनुदिन॥चोहुवेदांचें अध्यायन॥केलें संपुर्ण चौ
घांहिं॥७१॥जो शिवर्णि तां वेदवेडे॥तो राम गुरु पाशिं वेद पुढें॥आध्ययन सांग तां सांकडे॥
॥६॥ गुरुशि न पडे सर्वथा॥७२॥या प्रकारें दहा शवरसें तलसा॥संपुर्ण जालि रघुनाथा॥मग पु
सोनि वशिष्ट दशरथा॥श्रीराम तिर्थे नि[illegible]॥७३॥ब्रह्मचर्यें तिर्थाटण॥करावें हे शास्त्र
प्रमाण॥रुझाणो निरघुनंदन॥ति[illegible]शिनिघाला॥७४॥तिर्थाटणा वें धुन्दें
घेउण॥निघालें सवें अपार सैन्य॥स[illegible]धनासुमंत प्रधान॥असंभाव्य धनवां
टावया॥७५॥सवत्स गाईचे भार॥नाना व[illegible]अळंकार॥तिर्थि वांटिं रघुविर॥याचकां ॥६५
शिसन्मानें॥७६॥जो तिर्थाचा जेसा महिमा॥पुर्ण॥श्रीराम करितसे त्रिविधान॥जा
चेनि सकळ तिर्थे पावन॥तो रघुनंदन तिर्थें हिडे॥७७॥लोकसंग्रहार्थ कारण॥॥

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "Joint project of the"

7A

तिर्थेहिं श्रीराममनमोहन॥ तिसुकिं तिर्थे करा श्रवण॥ संतश्रोते सर्व हि॥७८॥का
शिश्वरनिर्मळ॥ त्रिंबक उज्जनि माहांकाळ॥ वोंकारममलेश्वर ज्याश्वनिळ॥ बद्रि
केदार घुस्मेश्वर॥७९॥ नागनाथ वैजनाथ थोर॥ मल्लिकार्जुन भिमाशंकर॥ सोमना
थ रामेश्वर॥ जोतिर्लिंगे द्वादश हि॥८०॥ अयोध्या मथुरा हरिहर॥ काशि कांति
अवंतिनगर॥ द्वारावति गोमति तिर॥ सप्तपुरया अनुक्रमें॥८१॥ तिर्थराज मु
ख्य त्रिवेणि॥ पंचप्रयाग पुण्यखाणि॥ रुद्रप्रयाग कर्णप्रयाग माघहारिणि॥
गुप्तप्रयाग समर्थ॥८२॥ देवप्रयाग शिवप्रयाग पापहारण॥ निमिषारंण्य
धर्मारंण्य पंचकारंण्य॥ ब्रह्मारंण्य वेदारंण्य॥ बद्रिकाश्रम पावन तो॥८३॥ य
मुना सरस्वति भागिरथि॥ गौतमि कृष्णा भिमरथि॥ तापि नर्मदा भोगावति॥

Joint property of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

प्रवरा पुण्यवति मंदाकिनि ॥ ८४ ॥ आनंदवर्धनि पयोष्णि ॥ पिनाकि तुंगा किल्मिषना
शनि ॥ ऋलुमालुका वेरि पयोष्णि ॥ सुवर्णमुखरि शुभुमाका ॥ ८५ ॥ कपिला ताम्रव
॥ ७ ॥ र्णि शरावति ॥ तुंगभद्रा सोमवल्लि ॥ सावित्रि रेवा कुंकुमावति ॥ वेण्या वेदवति मल्ल
प्रहरा ॥ ८६ ॥ घटप्रहारि दिननलिनि ॥ गंडकि शारयु वेतरणि ॥ सोमनद शिवनद
(४) तापहारणि ॥ श्रोणभद्र नंदश्वर ॥ ८७ ॥ [illegible]गा ॥ अरणा प्राचिपुरंथरि ॥ वेत्रवलिस
सकुरगा कर्णकुमारि ॥ स्वामि कार्तिकि [illegible] वघ्लांचि पष्चिवरि ॥ विख्यात प्रवा
ह साचें ॥ ८८ ॥ वंजरा कालिका श्रमह[illegible] ॥ माहिंद्रि कालि मंत्रवेडुर्णि ॥ निरावलि ॥ ७ ॥
सुरनदि शेखोध्धारणि ॥ जयंति लाणि अहिर्णवि ॥ ८९ ॥ नाटकि लाणि अरु
कनरा ॥ फल्गु संवोलका त्रिपदा ॥ शांतिबाण नदि सुखदा ॥ अनुक्रमेन घ्या सर्वहि ॥ ९० ॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

818

शेषाद्रि आणि ब्रह्माद्रि ॥ मुक्तपिट पर्वत सिव्हाद्रि ॥ विंध्याद्रि आणि हेमाद्रि ॥ मानसस
रोवरि ॥ स्नान दान ॥ ११ ॥ अरुणाचळ आनंदवन ॥ कमळालये चिदंबरि पुर्ण ॥ अग
स्त्याश्रम पावन ॥ श्रीरंगपट्टण शोभिवंत ॥ १२ ॥ जनार्दन कन्याकुमारि ॥ शिवकांचि
विष्णुकांचि सुंदरि ॥ मच्छतिर्थ पक्षतिर्थ [illegible] वरि ॥ शंखोध्धार द्वारकाध्धार ॥ १३ ॥ ही
रण्यनदि संध्यावट ॥ ब्रह्मरत्नथमे स्तं[illegible]वट ॥ ब्रह्मयोनि पृथक वरि ॥ कुरुक्षे
त्र बिंदुतिर्थे पै ॥ १४ ॥ धर्मालय कळापग्राम ॥ गंगासागर शिंधुसंगम ॥ कौडण्यपुर
अंबिका ग्राम ॥ प्रेमपुर मार्तंड ॥ १५ ॥ बोका कन्हाळ कककेश्वरि ॥ विरास्वरूपि रत्नांबरि ॥
भ्रमर अंबिका ज्वालामुखि सुंदरि ॥ पितांबरि महाशक्ति ॥ १६ ॥ जोगळादेवि भैरवि ॥
सप्तश्रृंगि रोद्रिदेवि ॥ करविरवासिणि शांबवि ॥ हिंगुळजा आणि कमळजा ॥ १७ ॥

A joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(१)

चांगदेव मोरेश्वर ॥ गुसेकेदारवेटेश्वर ॥ अक्षयवटकुशतिर्थ पवित्र ॥ त्रिकुटाचळ सुंदररुपें ॥९८॥
॥८॥ हरिहरेश्वर नृसिंहपुर ॥ मुकमाधर्व विज्ञानेश्वर ॥ चक्रपाणि कंद मुलेश्वर ॥ जुनाटना
गेश्वर गोतमेश्वर तो ॥९९॥ सप्तयोजन कोटेश्वर ॥ दक्षणप्रयाग माधवेश्वर ॥ शिध्य
वट धुतपाप शिध्येश्वर ॥ पुर्वसागर [illegible]न ॥१००॥ वैराट पुष्कर माहाबळेश्व
र ॥ धुळखेट करंकर नारायणधार ॥ [illegible]या च्यर पांचाळेश्वर ॥ सत्यनाथ पर्णा
ळय ॥१॥ शिवकांति विष्णुकांती ॥ मे[illegible]टळाश्रम काळहरिलि ॥ वेदपुर गया
भरुणावलि ॥ उडपिक्षेघशाई सर्वेश ॥२॥ [illegible]नेपाद्वि अहोबळ ॥ स्वामिकार्तिक सत्य ॥
सुब्रह्मण्यकिस्कींदा मातंग पर्वत ॥ हंपि विरुपाक्षमुर्ति मेत ॥ पंपासरोवर निर्मळ ॥ ॥८॥
॥३॥ चित्रकुट रुक्मकुट लोणार ॥ अंबा अयोध्या माहाकाळ उर ॥ [illegible]कचंद्रीका

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(२४) अर्थोदयपवित्र॥ गोकर्णहृ द्रुष्णा सागरपैं॥४॥ हरिहरतिर्थें जंबुकेश्वर॥ अनेतशाई
विमकेश्वर॥ मथुरा विकर्ण प्रभाकर॥ विश्रांतिवनतपावन॥५॥ कुंभकोनमडोथ॥
मातुलिंगधुकरवरकत्रि विक्रमतिर्थ॥ मुद्गल मांधाता वेढा डंग नाथ॥ पंढरिक्षेत्र चंद्र
भागा॥६॥ अत्रिकोण आणि कर्णमुक॥ नागरगोररगडगुरु॥ आसापुरिनेपाळ॥ त्रिम
ळ॥ मंथन काकेश्वर कुशतर्पण॥७॥ गिनाशि कामाक्षि मातुलिंगथोर॥ शिता अशि
ला चिदंबरिश्वर॥ ब्रंह्म कटाहा हरिहरा॥ आदित्यवेश्यानर माहातिर्थ॥८॥ ब्रंह्मा
नंद ह्मणे श्रीधर॥ इतुकिं तिर्थे करा निरघुविर॥ अयोध्येशि हिनोध्धार॥ परतोनि आ
लाग झरे शि॥९॥ वशिष्टाशि साष्टांग नमन॥ दशरथाशि अनन्य शरण॥ त्रिये माते
शि रघुनंदन॥ करि नमन अभेदें॥१०॥ तिर्थें करोनि आलिया श्रीरामा॥ सदां

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(10)

विरक्त आणि निष्कामा॥ नावडे लौकिक संभ्रम॥ वैराग्य परम बाणले॥११॥ षड्रस अ
न्ने उत्तम आसने॥ हास्य विनोद शृंगार गायने॥ नावडे मृगया गमनागमन॥ येकांत पूर्ण आ
वडे॥१२॥ नावडे स्त्रियांशि संभाषण॥ नेत्र कामिनिचे विलोकन॥ नाशाग्रि द्रिष्टि ठेउन॥
॥९॥ आनंदघन डोलत॥१३॥ याच प्रकारें ति[घे बंधु]॥ माहा विरक्त निष्काम साधु॥ श्रीराम
सेवा करितां आनंदु॥ तिघे सहि सर्व[दा]॥१४॥ सवतो प्रति सृष्टि करणार॥ सिध्या
श्रमवासि गाधि कुमर॥ माहा तपस्वि वि[श्वा]मित्र॥ अयोध्ये सि पातला॥१५॥ आला जे
को नि गाधि सुत॥ सामोरा धावे दशरथ॥ सा[ष्टां]ग करुनि प्रणिपात॥ क्षेमालिंगन दिध ॥९॥
ले॥१६॥ द्रिष्टि देखोनि ब्राह्मण॥ जो न उटे करि जयमान॥ त्याचा आयुष्या होय खंडण॥
आले मरण अवकि त्याचें॥१७॥ जो ब्राह्मणाशि ने दि अभ्युथ्थान॥ तो दुसरे जन्मि होय श्वान॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai

(१०९) विध्वंशोधिल जालि त्याचें सदन॥ कोटें नांदतो ह्मणे नियं॥१९॥ तैसा नव्हे राजा दशरथ॥
माहाराज केवळ ब्राह्मणभक्त॥ कोशिकाचा धरोनि हस्त॥ शिंव्हासनि बैसविला॥२०॥
वस्त्रें अळंकारादि उपचार॥ देउनि पुजिले विश्वामित्र॥ मनिशिं भावि आजापाळपुत्र॥
धन्य दिवस आजिचा॥२१॥ ऋषिस [illegible] दशरथ॥ आजि मज हर्ष वाटे बहुत॥ तुम
चे पुरविन मिमनोरथ॥ कांहिं इच्छित मागा जी॥२२॥ ह्मणोनि केला नमस्कार॥ मग आ
शिर्वाद देत विश्वामित्र॥ सुर्यवंशी शुभ [illegible] उदार॥ अनंत कल्याण तुज लागिं हो॥२२॥
तुष्टि पुष्टि तुज लागिं हो बहुत॥ विप्र विष्णुभक्ति घडो संतत॥ प्रताप प्रज्ञा यशवंत॥
सुभद्र असंत तुज लागिं हो॥२३॥ तव शत्रुक्षय हो कां बहुत॥ धर्मे ऐश्वर्ये रिध्दि हो
बहुत॥ सार्थक आयुष्य सुख समस्त॥ तुज प्रभु हा दशरथा॥२४॥ विवेक ज्ञान स

a joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(११)

मध्यिंहा बहुल॥ अक्षयकल्याणपदहो प्रास॥ भुतदयाघडो संतत॥ कुळवृध्यिं बहुत
होकां॥२५॥ च्चिंतिल तहो पुर्णमनोरथ॥ सर्व अरिष्टहो कांशांत॥ सर्वाभिष्टहो कां तुजप्रा
॥१०॥ प्त॥ रविकुळवीरा धव जारे॥२६॥ निर्दोष यश वाढो बहुल॥ तव कीर्ति वर्णीत साधुसंत॥
याचकांच्चे मनोरथ॥ पुरोत समस्त तुझेनि॥२७॥ जना चारिं नसो आदर॥ संत भजनि तुझे
य सादर॥ माझें आशिर्वादिं समर्थ सु फळहो कां तुज राया॥२८॥ सद्बुध्यि वसो तुझे
हृदइं॥ ब्राह्मणा चा आशिर्वाद घेइ॥ माझे चिंतिल कार्य समस्तहि॥ हो संपुर्ण
तुझेनि॥२९॥ मि मागत नाहिं संपत्ति धन॥ न लगे राज्य सिंहासन॥ माझा मखमो
डिलि राक्षसयेउन॥ देइं रघुनंदन रक्षावया॥३०॥ शिध्यि न पावे यकयज्ञे॥ मारिच्यि ॥१०॥
सुबाहु ताटिका येउन॥ जालि हा मख्य व्यें भक्षुन॥ देइं रघुनंदन रक्षावया॥३१॥ग॥

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com